वार्तालाप–500 हैदराबाद–26.1.08 (आं.प्र.)
Disc.CD No.500, dated 26.1.08 (Andhra Pradesh)

समय–5.25–7.40
जिज्ञासु– कन्या, मातायें ही सरेंडर होते हैं भाई क्यों नहीं?
बाबा– भाई अपन को सरेंडर समझे और सरेंडर हो कर चले क्योंकि कन्याओं, माताओं को शरण लेने की दरकार है, आज की दुनिया में। उनका तन कोमल होता है। पुरूषों को शरण लेने की कोई दरकार नहीं। इसलिए पुरूष चाहे तो सेवा में अपने को अर्पण कर सकते हैं। मना नहीं है। बाकी पुरूष ये चाहे कि हम सरेंडर हो करके रहेंगे तो बहनों, माताओं की परवरिश कैसे होगी? मुरली में तो बोला है कन्याओं, माताओं को पेट के लिए माथा नहीं मारना है। पुरूषों को माथा मारना है। बाहर की दुनिया के संसर्ग संपर्क में रह करके पुरूषों का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। माताओं, कन्याओं का तो बिगड़ता है। इसलिए उनको शेल्टर मिलता है। भाईयों को शेल्टर लेने की दरकार नहीं है। भाई लोग अगर ये चाहे कि हम शेल्टर में रहेंगे तो फिर वो राजा क्या बनेंगे? जो अपनी जिम्मेवारी अपने आप नहीं उठाय सकते हैं तो राजा बनने वाली बात तो खत्म हो जाती है।
Time: 5.25-7.40
Student: Why do only the virgins and mothers surrender, why not the brothers?
Baba: Brothers should consider themselves to be surrendered and they should live as the surrendered ones; (virgins and mothers surrender) because virgins and mothers need to take asylum in today's world. Their bodies are delicate. Men do not need to take asylum at all. This is why if men wish, they can dedicate themselves for service. It is not prohibited. But if men (brothers) wish to surrender and live (in the *ashram*), then how will the sisters and mothers be fostered? It has been said in the *Murli*, virgins and mothers don't have to make strenuous efforts for filling their stomachs. Men should make strenuous efforts (for earning food). The men will not be affected by living in contact and connection with the outside world. Mothers and virgins are indeed affected. This is why they receive shelter [here]. Brothers need not take shelter. If brothers wish that they should live in shelter, then will they become kings? The one who cannot take up his own responsibility then the issue of their becoming kings ends.

जिज्ञासु– कन्याओं, माताओं को भी तो राजा बनना है ना भले.....
बाबा– कन्याओं, माताओं के लिए बोला है नारी से... क्या बनना है? नारी से नारायण बनना है ये नहीं बोला। क्या बोला है? नारी से लक्ष्मी बनना है। लक्ष्मी फिर भी किसके आधीन होती है? नारायण के आधीन होती है।
जिज्ञासु– बाबा, ये तो संगम की बात है।
बाबा– संगम की ही बात है। संगम में ही पुरूषार्थ कर रहे हैं।
Student: Virgins and mothers also have to become kings, although....
Baba: It has been said for the virgins and mothers that…… what should they change into from a woman? It has not been said that they have to change from a woman to Narayan. What has been said? You have to change from a woman to Lakshmi. However, on whom is Lakshmi dependant? She is dependant on Narayan.
Student: Baba, it is about the Confluence Age.
Baba: It is indeed about the Confluence Age. We are making special effort for the soul *(purusharth)* in the Confluence Age only.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय–8.45–13.45
जिज्ञासु– परिवार में एक ज्ञान में निकल के आया तो पूरा परिवार आज नहीं तो कल जरूर ज्ञान में आ जायेगा। बाप को जानेगा, मानेगा, फिर पक्का बीज रूपी आत्मा बनेगा या ना बनेगा? परिवार बोले तो किसको कहेंगे बाबा? खून के रिश्तेदार या अपने लौकिक दुनिया में कुछ काम करने के जगह पे अपन से गहराई से कोई है, अपन से बहुत मिल–जुलके रहता है, अपन को मानता है, जानता है, अपन को बहुत रिश्तेदार बोलके समझता है, आत्मिक परिवार जैसे समझता है वो भी परिवार बनेगा या नहीं बनेगा? सिर्फ खून के रिश्तेदार को ही परिवार कहेंगे या उनको भी परिवार कहेंगे?

Time: 8.45-13.45

Student: If one member of a family comes in the path of knowledge, then, if not today, tomorrow the entire family will certainly come in the (path of) knowledge. They will recognize the Father, accept Him; then will they become firm seed-form souls or not? Baba, what constitutes a family? Does it refer to the blood relatives? Or, in the *lokik* world, at our workplace, if someone is very close to us, is affable to us, accepts us, knows us, considers us to be very much like his relative, considers himself to be like a member of the spiritual family, then, will he be included in our family or not? Will only the blood relatives constitute a family or will they (i.e. persons close to us) also be said to be members of our family?

बाबा– परिवार कहा जाता है खून के कनेक्शन को। एक परिवार में 8 भाई है, चाचा है, माँ–बाप है तो वो सब परिवार है। इसलिए परिवार के जो भी भांति है वो सब ज्ञान में चलेंगे। क्यों चलेंगे? इसलिए चलेंगे कि एडवांस ज्ञान जो भी हम सुनते है, परिवार के लोग भी सुनते हैं। भले स्वीकार नहीं करते। सुनते हुए भी वो हमको स्वीकार करते हैं। परिवार से हमको धक्का दकर निकाल नहीं देते और दूसरे धर्म की आत्मायें जो तथाकथित ब्राह्मणों में भरी पड़ी है वो क्या करते हैं? वो हमको धक्का देकर निकाल देते हैं। हमको बिल्कुल स्वीकार ही नहीं करते। इसलिए वो आवेंगे, परिवार के लोग। जब आवाज निकलेगा तो उनको आकर्षण हो जावेगा और वो नहीं आवेंगे।

Baba: Family means those who are in blood connection. If there are 8 brothers in a family, if there is a paternal uncle *(chacha)*, if there are parents, then they all are part of the family. This is why all the members of the family will follow the knowledge (in the end). Why will they follow? They will follow because whatever advance knowledge we hear, the members of our family also listen to it, although they do not accept it. In spite of listening, they accept us. They do not throw us out of the family and what do the numerous souls belonging to the other religions among the so-called Brahmins do? They throw us out. They do not accept us at all. This is why they, the members of our family will come (in the knowledge). When the sound spreads, then they will feel attracted and they (who threw us out) will not come.

जिज्ञासु– बोले तो अपन इतना लम्बा समय पुरूषार्थ करते हुए भी पक्का बीज रूपी आत्मा का स्टेज में टिक नहीं पा रहे हैं। फिर वो लोग अंत में आ करके कहां तक धारणा करके बीज रूपी आत्मा बनेगा?

बाबा– उन्होंने सुना तो है सब कुछ? अभी सुन रहे हैं कि नहीं? इतना ऑपोजिशन नहीं कर रहे हैं कि तुमको निकाल के घर से बाहर कर दे। अपने दिल में फिर भी तो जगह दी है ना? तो इसका उजुरा उनको ये मिलेगा कि भले राज परिवार में नहीं आवेंगे क्योंकि राजयोग नहीं सीखा है, प्रैक्टिस नहीं की है लेकिन प्रजा वर्ग में जरूर आ जावेंगे और प्रजा तो ढेर की ढेर बनती है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: I mean to say , despite making special effort for the soul for such long time, we are unable to become constant in the seed-form stage . Then, how far will those people inculcate and become seed-form souls when they come in the end?
Baba: Have they at least **heard** everything? Are they now listening or not? They are not opposing to the extent that they drive you away from home. Even so, they have given (you) place in their heart, haven't they? So, they will receive the return for this in a sense that although they will not become a part of the royal family because they have not learnt *Rajyog*, they have not practiced (*Rajyog*), they will certainly come in the subjects' category and subjects emerge in large numbers.

जिज्ञासु– बोले तो अपना परिवार भी जरूर ये सारा वृक्ष के बीज रूपी का स्टेज में जरूर आ जायेगा मगर इतना नहीं बोल सकते अपन कि वो भी राज परिवार में आते हैं बोलके।
बाबा– राज परिवार में वो ही आवेंगे जिन्होंने राजयोग की प्रैक्टिस की है। जिन्होंने सिर्फ संदेश लिया है, पढ़ाई नहीं पढ़ी है।
Student: It means our family will also definitely attain the seed-form stage of the entire tree, yet we cannot say that they will also come in the royal family.
Baba: Only those people, who have practiced *Rajyog*, will come in the royal family. Those who have received just the message, those who have not studied the knowledge (will not come in the royal family).

जिज्ञासु– परिवार का बात अलग है बाबा। अपने लौकिक दुनिया में काम करने का जगह पे, कुछ रहने का जगह पर अपन से गहराई से बोलता कोई, अपन को 24 घण्टा अपने उपर ज्यादा समय लगाया वो लोगों का हाल क्या है? वो लोगों का पार्ट कैसा होगा? वो लोग 63 जन्मों के हिसाब से अपना शुटिंग के टाईम में अपन से मिलके फिर अपना बात मानते हुए भी बाबा का ज्ञान भी सुन रहे हैं मगर उतना गहराई से नहीं पहुँचता है। फिर उन लोगों का हाल क्या है? वो लोग भी जरूर अपना साथ रहते हुए भी वो लोग भी ज्ञान स्वीकार करके अपना बात मान रहा है, अपना को जान रहा है, अपना बाबा को भी स्वीकार कर रहा है मगर ज्ञान में नहीं आ रहा है, बोले तो वो लोग भी जरूर आ जायेगा ना आ जायेगा?
Student: Baba, the issue of family is different. What will be the condition of those who speak to us closely, of those who dedicate themselves to us throughout the day at our workplace, at our place of residence in the *lokik* world? What kind of a part will those people play? As per the *karmic* accounts of 63 births they meet us in our shooting period and accept our versions, they are also listening to Baba's knowledge, but they do not understand it deeply. Then, what will the condition of such people be? While living with us those people too accept the knowledge, they are accepting our versions, knowing us, also accepting our Baba, but they are not entering the path of knowledge; I mean , whether those people will certainly come (in the path of knowledge) or not?

बाबा– जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना प्राप्ति करेंगे। उन्होंने सिर्फ सुना लेकिन ऑपोजिशन करते रहे। तो फिर ऊँच पद कैसे पा जावेंगे? हाँ, अंत में जब आवाज निकलेगी तो उनका नाक नीचे झुक जावेगा कि ये तो सच्चे निकले। इसलिए हो सकता है कि उनमें से भी बहुत आ जावे। तो संदेश देने में कोई हर्जा नहीं। कोई भी हो संदेश तो देते ही रहना चाहिये। सिर्फ संदेश मात्र देने से प्रजा बनती है और प्रजा तो ढेरों की ढेर बनती है। राज परिवार में आने वाले बहुत थोड़े होंगे और प्रजावर्ग में आने वाले ढेर के ढेर होंगे।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: The more they do *purusharth*, the more attainments they will achieve. They just listened but continued to oppose. Then how can they achieve a high post? Yes, in the end when the sound will spread, they will bow their heads (and say) these people have turned out to be the true ones. That is why it is possible that many among them will come (to the path of knowledge) as well. So, there is no harm in giving message. Whoever it may be, you should continue to give message. Subjects emerge on just giving message and subjects emerge in large numbers. Those who come in the royal family will be very few and those who come in the subjects' category will be numerous.

समय–18.20–20.25
जिज्ञासु– माता गुरू बनने के बिना कोई सुधरने वाला नहीं है बोले बाबा। फिर शंकरजी भी एक पुरूष है। उसका बुद्धि को परिवर्तन करने के लिये सबसे बड़ा माता कौन है? उसको सिखाने के लिये, सुधारने के लिये? परिवर्तन कराने के लिये?
बाबा– लक्ष्मी कौन बनती है?
जिज्ञासु– वो तो छोटी माँ बनती है। भारत माता।
बाबा– तो जो भारत माता लक्ष्मी बनती है, सच्ची गीता बनती है तो गुरू भी बनती है। अच्छे से अच्छा ऊँचे से ऊँचा गुरू होगा तो प्राप्ति अच्छी करायेगा या नीची प्राप्ति करायेगा? अच्छी प्राप्ति करायेगा।
Time: 18.20-20.25
Student: Baba has said that nobody can reform without someone becoming his mother *guru* (for them). Then Shankarji is also a male. Who is the senior most mother to change his intellect, to teach him, to reform him, to transform him?
Baba: Who becomes Lakshmi?
Student: The junior mother (*choti ma*), Mother India becomes (Lakshmi).
Baba: So, the Mother India who becomes Lakshmi, who becomes true Gita, becomes *guru* as well. If the *guru* is best, highest, will he make us attain good attainments or will he make us attain low attainments? He will make us attain good attainments.

जिज्ञासु– मगर मंदिरों में चित्रों में दिखाया है शंकर को महाकाली आ कर बुध्दि के पेट को दबा दिया।
बाबा– महाकाली बुध्दि के पेट को नहीं दबा दिया। छाती के उपर पाँव रख दिया माना बेज्जती कर दी। पेट को नहीं दबाया।
जिज्ञासु– महाकाली से कुछ परिवर्तन नहीं हुआ सिर्फ लक्ष्मी से ही परिवर्तन हुआ।
बाबा– परिवर्तन शक्ति ही परिवर्तन करेगी ना? एडवान्स पार्टी में तीन प्रकार के ग्रुप है। एक प्लैनिंग पार्टी, एक इन्सपिरेटिंग पार्टी और एक प्रैक्टिकल पार्टी। तो प्रैक्टिकल पार्टी ही परिवर्तन करेगी और प्रैक्टिकल होता ही है प्युरिटी से। जितनी प्युरिटी होगी प्रैक्टिकल ऑटोमैटिक होगा। क्योंकि प्युरिटी से युनिटी ऑटोमैटिकली बन जाती है। इसलिए बोला शहद के मक्खियों की एक रानी निकलती है और पीछे–पीछे सारा ही झुंड चला जाता है।
Student: But it has been shown in the pictures in temples that *Mahakali* (a goddess) came and pressed the stomach-like intellect of Shankar (with her feet).
Baba: *Mahakali* did not press the stomach-like intellect. She placed her feet on the chest (of Shankar), i.e. she humiliated him. She did not press his stomach.
Student: No transformation was brought about by *Mahakali*, transformation took place only through Lakshmi.
Baba: Only the *parivartan shakti* (power of transformation) will transform, will she not? There are three kinds of groups in the advance party. One is the planning party, one is the inspiriting party and one is the practical party. So, only the practical party will bring about

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

transformation and something happens in practical only through purity. The more someone has purity, the more things will take place in practical automatically because purity leads to unity automatically. That is why it has been said that one queen of honeybees emerges and the entire swarm follows her.

समय –22.28–23.06
जिज्ञासु– बाबा स्थूल में परमधाम क्या है?
बाबा– स्थूल में परमधाम माना शरीर भी रहे और परमधामी स्टेज भी बनी रहे। शरीर रहते–रहते स्टेज कैसी हो मन, बुध्दि की? निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी। देह का कोई अहंकार नहीं, देह की कर्मेंद्रियों में कोई विकार न भासे, कर्मेंद्रियां शीतल अनुभव हो। वो ही परमधाम की स्टेज है।
Time: 22.28-23.06
Student: Baba what is the supreme abode in physical sense?
Baba: The supreme abode in a physical sense means that the body should exist as well as the supreme abode like stage should remain constant. How should be the stage of the mind and intellect while the body is alive? Incorporeal, viceless, egoless. There should not be any ego of the body, there should not be any vice in any of the organs of action of the body, and the organs of action should be cool. That very stage is a stage of the supreme abode.

समय–23.08–25.55
जिज्ञासु– सात्विकता और अहिंसा का परिभाषा क्या है?
बाबा– सात्विकता और अहिंसा तो एक ही बात है। सात्विकता होगी तब ही अहिंसा होगी। तामसी तत्व जितना जास्ती होगा उतनी हिंसा जरूर होगी।
जिज्ञासु– और ये चूहे और मच्छरों को मारना ये हिंसा होती है या....
बाबा– एक है बड़ा पाप और एक है छोटा पाप। एक है बड़ा पुण्य और एक है छोटा पुण्य। जो मच्छर, मक्खी है, कीटाणु हैं, उनमें, उन आत्माओं में ज्ञान को समझने की शक्ति है? नहीं है। और मनुष्य में? ज्ञान को समझने की शक्ति है। तो एक मनुष्य को बचा लिया उसमें भी आत्मा है और एक मच्छर को बचा लिया। दोनों का पुण्य बराबर बनेगा क्या? नहीं। इसलिये मनुष्य जाति को बचाने के लिये... क्योंकि वो परमात्मा बाप के जास्ती नजदीक है। मनुष्यात्मायें परमात्मा के ज्यादा नजदीक है या कीट, पशु, पक्षी, पतंगे और कीड़े, मकोड़े जास्ती नजदीक है? मनुष्य जास्ती नजदीक है। तो मनुष्यों को बचाने के लिए अगर कीट, पशु, पक्षी, पतंगों को मारना भी पड़े तो भी पुण्य ज्यादा बनेगा या पाप ज्यादा बनेगा? पुण्य बनेगा।
Time: 23.08-25.55
Student: What is the definition of trueness *(satwikta)* and non-violence?
Baba: Trueness and non-violence is one and the same. There will be non-violence only if there is trueness. The more there are degraded qualities *(tamasi tatva)*, the more there will be violence definitely.
Student: And does killing of mice and mosquitoes constitute violence or....
Baba: There is a big sin and there is a small sin. There is a big noble act *(punya)* and there is a small noble act. Do the mosquitoes, flies, microbes, (i.e.) their souls have the power to understand knowledge? They do not have. And what about the human beings? They have the power to understand the knowledge. So, if a human being was saved, he has a soul and if a mosquito was saved; will both acts reap equal merits? No. This is why in order to save the humankind….. because they (human beings) are closer to the Supreme Soul Father. Are the human souls closer to the Supreme Soul or are the (souls of) worms, animals, birds, moths, insects and spiders closer (to Him)? Human beings are closer. So, in order to save human

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

beings, even if it is required to kill the worms, animals, birds, moths, will it accumulate more merits or will it make us stained by sins more? It will cause accumulation of more merits.

जिज्ञासु– क्योंकि सात्विकता भी भावना की बात है ना बाबा।
बाबा– भावना क्या? ये भी तो भावना है कि भगवान के जो जास्ती नजदीक है, जो भगवान को जास्ती पहचान सकते हैं वो ज्यादा कल्याण करेंगे या जो बहुत दूर है बुध्दियोग से वो जास्ती संसार का कल्याण करेंगे? ज्यादा वैल्युबल कौन है? जो जास्ती वैल्युबल है उसकी पहले रक्षा करनी पड़े।
Student: Baba because trueness is also an issue of feelings, isn't it?
Baba: What feelings? This is also a feeling, will those who are closer to God, those who can recognize God more bring benefit more or will those who are very far away from Him through their connection of the intellect *(buddhiyog)* bring more benefit to the world? Who is more valuable? The ones who are more valuable will have to be saved first.

समय–29.40–31.40
जिज्ञासु– पियु की वाणी पावरफुल थी या मुरली पावरफुल थी?
बाबा– ओल्ड़ इज़ गोल्ड़। (old is gold)
जिज्ञासु– बाबा, तो फिर ऐसा नहीं कहना चाहिये था कि ज्ञान इतना नहीं था।
बाबा– ज्ञान नहीं था, उस समय ज्ञान क्या क्लियर था? आत्मा और परमात्मा का जो मूल परिचय है, बेसिक परिचय है वो उस समय था क्या? लिंग को याद करते थे, लाल लाईट के गोले को याद करते थे। तो ज्ञान तो अधुरा ही था ना? और ये नहीं कहना चाहिये कि आदि में इतना ज्ञान नहीं था... अरे! ये तो मुरली में बोला है। मुरली की बात को हम ये कह सकते हैं कि नहीं ऐसा नहीं कहना चाहिये?
Time: 29.40-31.40
Student: Were the versions *(vani)* of *Piu* powerful or was the *Murli* powerful?
Baba: Old is gold.
Student: Baba, then it should not have been said that there was not so much knowledge (in the beginning).
Baba: There wasn't (much) knowledge; (because) was the knowledge clear at that time? Was the original introduction, the basic introduction of the soul and the Supreme Soul available at that time? They used to remember the *ling*; they used to remember the ball of red light. So, the knowledge was certainly incomplete at that time, was it not? And (regarding the statement) 'we should not say that there was not so much knowledge in the beginning'.....Arey! This has been said in the *murli*. Can we say about the versions of *Murli* : no, this should not be told like this?

जिज्ञासु– बाबा, उसका प्रूफ भी अभी तक नहीं मिला है।
बाबा– जो चीज नहीं मिली है तो उसका मतलब यही है कि, ये हो सकता है कि वो चीज है ही नहीं? (जिज्ञासु– है।) हाँ, अभी नहीं मिली, आगे चलकर मिल जायेगी।
जिज्ञासु– सेवकराम को जो यज्ञपिता कहते हैं, प्रजापिता कहते हैं उनका मृत्यु सहज थी या हत्या की गई?
बाबा– दुनिया की ऐसी कोई बात नहीं है जो तेरे पर लागु ना होती हो। अगर वो आत्मा ऐसी मृत्यु अनुभव न करे तो दुनिया की और दूसरी आत्मायें कैसे अनुभव कर लेंगी? उस बीज में सब कुछ समाया हुआ है। अच्छे से अच्छा भी समाया हुआ है और बुरे से बुरा भी समाया हुआ है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, its proof has not yet been found either.
Baba: If something has not been found, does it mean that it is only possible that the thing does not exist at all? (Student: It exists.) Yes, it has not been found so far; it will be found in the future.
Student: Did Sevakram, who is called the *yagyapita* (father of the *yagya*), who is called Prajapita die a natural death or was he murdered?
Baba: (It has been said in the *Murlis* that) There is nothing in the world that cannot be applied to you. If that (Prajapita's) soul does not experience such death, then how will the other souls of the world experience it? Everything is contained in that seed. The best and the worst (both) are contained in it.

समय–38.52–39.40
जिज्ञासु– बाबा सभाओं में बापदादा का पर्सनल मुलाकात बच्चों से–ये मतलब क्या है बाबा?
बाबा– बाप पब्लिक में भी पर्सनल मुलाकात कर लेते हैं। माना एक–एक का पोतामेल तो बाप के पास है ना? तो बाप किसीके पोतामेल के आधार पर कोई बात ऐसी गुप्त कह देता है जो उसी बात को उसी व्यक्ति को पहचान में आती है, समझ में आती है और दूसरों को समझ में ही नहीं आती। तो पब्लिक के बीच में पर्सनल मुलाकात हो गई।
Time: 38.52-39.40
Student: Baba, what is meant by 'Bapdada's personal meeting with the children in gatherings?
Baba: The Father meets personally in a public gathering as well. It means that the *potamail* of each one is available with the father, isn't it? So, the father tells about some such secret issue on the basis of someone's *potamail* that only that person realizes it, understands it and others do not understand it at all. So, it is like a personal meeting in public.

समय–40.46–42.30
जिज्ञासु– कहते हैं ना शरीर धारण कराकर सजा देकर फिर साथ ले जाऊँगा। तो फिर बाबा जो प्रवेश करती हैं वो सूक्ष्म शरीर से प्रवेश कर सजा देगा या आत्मा रूप में प्रवेश कर सजा देगा?
बाबा– जो आत्मायें प्रवेश करती है जो औलिया लोग होते हैं प्रवेश करने वाली आत्माओं को बांध लेते हैं। उनको शरीर से बाहर नहीं निकलने देते और फिर उनकी प्रताड़ना करते हैं। तो शरीर में रह करके उनको एहसास कराते हैं ना? ऐसे ही धर्मराज की सजायें भी ऐसी ही है। कि भल कोई को सूक्ष्म शरीर मिला हुआ है जब चाहे बाहर आ जाये जब चाहे प्रवेश करे लेकिन जब सजायें मिलेंगी तो उस आत्मा को भी महसूस होगा। शरीर के द्वारा ही सजाओं की महसूसता आयेगी।
Time: 40.46-42.30
Student: It is said , I will make them take on a body and give them punishment and then take them along (with Me). So, Baba, does the soul that enter, enter with a subtle body and give punishment or will it enter in a soul-form and give punishment?
Baba: The *Aulias* (tantriks) capture the souls that enter. They do not allow them (the souls) to go out of the body and then they admonish them. So, they make them realize while being in a body, don't they? Similarly, the punishments of *Dharmaraj* are also similar. Although someone has a subtle body, it can come out (of the body) whenever it wants and enter (the body) whenever it wants, but when they receive the punishment, then that soul will also feel. The feeling of punishments will be through a body only.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– बाबा, क्राईस्ट के विषय में बताया गया है कि वो शरीर को दण्ड मिलता है आत्मा को दण्ड नहीं मिलता है। तो फिर वो बात यहाँ क्यो नहीं लागू होती?
बाबा– वो आत्मा तो सतोप्रधान थी। जो सतोप्रधान आत्मा है उसको सजा नहीं मिलती। यहाँ तो तमोप्रधान आत्माओं की सजा की बात है। क्राईस्ट का तो पहला जन्म था और अभी जो आत्मायें सजा भोगेंगी उनके तो अंतिम जन्म है। तामसी आत्मायें है।
Student: Baba, it has been said about Christ that the body receives the punishment and not the soul. So, why is the same not applicable here?
Baba: That soul was a *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) soul. A *satopradhan* soul does not receive punishment. Here it is an issue about the punishment for the tamopradhan (dominated by the quality of darkness or ignorance) souls. It was the first birth of Christ and the souls that will experience punishments now are in their final birth. They are degraded *(tamasi)* souls.

समय–1.06.20–1.06.48
जिज्ञासु– बाबा सतयुग में शरीर कैसे छोड़ते हैं?
बाबा– वहाँ ऑटोमैटिक पहले से पता लग जाता है कि अब शरीर छोड़ना है। सागर के किनारे चले जाते हैं। शरीर छोड़ा और सागर की लहर आई और उठा ले गई।
Time: 1.06.20-1.06.48
Student: Baba, how do they (the deities) leave their bodies in the Golden Age?
Baba: There, they come to know it before automatically, now we have to leave the body. They go to the seacoast. As soon as they leave the body, a wave of the ocean comes and carries the body away.
……..……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info